हिंदी भाषा एवं साहित्य शिक्षण : एक अवलोकन

*डॉ0 बृजेश कुमार पाण्डेय**

भाषा से आशय होता है मानवीय व्यक्त वाणी से। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा का व्यवहार करता है। अनादि काल से यह क्रम चला आ रहा है। जब मनुष्य कंदराओं में रहता था तब भी वह अपनी अभिव्यक्ति दीवारों पर तरह– तरह के चित्र या चिन्ह बनाकर उन्हें प्रकट करता था। इन्हीं चित्रों या चिन्हों से क्रमशः लिपियों का विकास होता गया। भाषा को परिभाषित करते हुए विद्वानों ने कहा भी है कि– 'भाष्यते व्यक्तवाग् रूपेण अभिव्यज्येत इति भाषा' अर्थात् व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है उसे 'भाषा' कहते है।[1]भाषा वक्ता के विचार को श्रोता तक पहुंचाती है यानी कि वह विचार– विनिमय का साधन होती है। भाषा एवं साहित्य शिक्षण में इस विचार विनिमय की बहुत आवश्यकता होती है। भाषा शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में भाषा के कौशलों जैसे कि– बोलना, पढ़ना, लिखने आदि का विकास किया जाता है तथा साहित्य शिक्षण के द्वारा सामाजिक तथा मानवीय संबंधों को समझने तथा समझाने का उपक्रम किया जाता है।

प्रारम्भ में कोई व्यक्ति भाषा सीखता है और फिर उस भाषा से सृजित साहित्य को पढ़ता है, लेकिन धीरे– धीरे वह देखता है कि भाषा और साहित्य में कोई विशेष अंतर नहीं है, भाषा से ही साहित्य बनता है। साहित्य शब्द का प्रयोग पहले मूलतः मनुष्य के भावों– रागों पर आधारित और उन्हें उद्वेलित– उद्दीपित करने वाली रचनाओं के लिए हुआ था, पर आज इसका अर्थ विस्तार इतना अधिक हो गया है कि हम कभी– कभी वाङगमय– मात्र को भी साहित्य कहने लगे है– यानी भाषा के माध्यम से जो भी व्यक्त या निर्मित होता है, सब कुछ साहित्य है। चाहे वह कविता कहानी हो या चाहे इतिहास, विज्ञान, समाज शास्त्र या कला का विवेचन, चाहे अखबार या सामान्य ज्ञान की पुस्तक ही क्यों न हो।[2] साहित्य ही भाषा– शिक्षण के लिए उपयुक्त सामग्री प्रदान करने का कार्य करता है। क्योंकि किसी भी साहित्य में भाषा का रचनात्मक रूप प्रदर्शित होता है और इसमें प्रयुक्त शब्द की अनेक अर्थ संभावायें होती है जिससे कि प्रत्येक पाठक अपना अलग– अलग अर्थ संधान करता है। इस प्रकार हम साहित्य के अनुशीलन से भाषा के बहुअर्थी बहुरूपी, कल्पनामूलक प्रयोग की सूझ पाते है, उसकी अर्थगत बारीकियों के प्रति सचेत– संवेदित होते है।[3]

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की भाषा घोषित किया गया है। केवल कार्यालय ही नहीं वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र, विधि के क्षेत्र, सामाजिक विज्ञान तथा संचार माध्यमों के क्षेत्र में भी हिंदी का व्यापक प्रयोग होता है। उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी की व्यापकता है। हिंदी शिक्षण प्राथमिक स्तर की कक्षाओं से लेकर उच्च स्तर की कक्षाओं तक होता है। एक अध्यापक विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए जो भी तरीके काम में लाता है वे सब शिक्षण की विधियां कहलाती है।

***सहायक प्राध्यापक– हिंदी शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैकुण्ठपुर, जिला– कोरिया (छ.ग.) मो0 9479158743**

हिंदी भाषा के शिक्षण के निम्न लिखित उद्देश्य होते है :–

01) कोई भी व्यक्ति शुद्ध तथा स्पष्ट रूप ने अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता पा सके। बिना भाषिक ज्ञान के शुद्ध उच्चारण सर्वथा असम्भव है। इससे न केवल भाषा के निश्चित रूप पर प्रभाव पड़ता है बल्कि शब्द का अर्थ ही परिवर्तित हो जाता है। एक बात और वह यह कि जो हम बोलते है वही लिखते भी है अतः उच्चारण का गलत प्रभाव लेखन पर भी पड़ेगा।

02) हिंदी भाषा शिक्षण के द्वारा हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को संरक्षित करने के साथ– साथ उनका प्रसार भी कर सकते है।

03) किसी भी राष्ट्र में राष्ट्रीयता का भाव वहां की भाषा के माध्यम से ही विकसित किया जा सकता है और हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसके माध्यम से सम्पूर्ण देश वैचारिक आदान–प्रदान बड़ी सुगमता से करता है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हिंदी किसी न किसी रूप में बोली और समझी जाती है।

04) हिंदी भाषा के माध्यम से सत्साहित्य के सृजन की प्रेरणा देना।

05) हिंदी भाषा के शिक्षण से समाज तथा छात्रों को भावानुकूल, भाषा प्रयोग, शब्दों, वाक्यांशों, लोकोक्तियों, गद्य– पद्य में निहित वैचारिक अनुभुतियों तथा आनंद से परिचित कराना।

06) हिंदी भाषा के शिक्षण से व्यक्ति या छात्रों को ये प्रमुख उद्देश्य प्राप्त करने में सहायता तथा समझ को विकसित करने में मदद मिलती है– ज्ञानात्मक उद्देश्य, कौशलात्मक उद्देश्य, समीक्षात्मक उद्देश्य, सृजनात्मक उद्देश्य और अभिवृत्यात्मक उद्देश्य।

आज के समय में व्यक्ति हिंदी सीख तो लेता है लेकिन शुद्ध हिंदी सीखने के लिए उसे हिंदी के भाषिक एवं व्याकरणिक ज्ञान से अवश्य परिचित होना पड़ेगा। इसके अभाव में वह हिंदी के साहित्य का सम्यक प्रकार से न तो आस्वादन कर सकेगा और न अनुशीलन ही।

जहां हिंदी के भाषिक शिक्षण के अन्तर्गत भाषा की शुद्धता से अवगत कराया जाता है, वर्तनी, वर्ण, व्याकरण आदि का अध्ययन कराया जाता है वहीं हिंदी में साहित्य– शिक्षण द्वारा ज्ञानात्मक के साथ– साथ भावात्मक और सौन्दर्यात्मक अभिवृत्ति का विकास कराया जाता है। साहित्य शिक्षण में संवेदना को महत्व दिया जाता है क्योंकि मानवीय शिक्षण के लिए संवेदना का होना अति आवश्यक है। हिंदी में साहित्य शिक्षण के लिए निम्न उद्देश्य हो सकते है :–

01. साहित्य में चित्रित मानव– जीवन, भाव, विचार आदि का दर्शन, ज्ञान और बोध कराना।[4]
02. साहित्य अभिव्यक्ति के विविध रूपों यथा– कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक इत्यादि से अवगत कराना।
03. मनुष्य की अभिप्रेरणा को जगाना।
04. साहित्य का अध्ययन मातृभाषा में करने से व्यक्ति को आनंद भी आता है तथा वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से बंधा रहता है।
05. प्रत्येक साहित्य का संबंध जीवन और समाज से अवश्य होता है। इसलिए साहित्य का अध्ययन करने से व्यक्ति समाज से परिचित होता है।

06. साहित्य शिक्षण से व्यक्ति नये– नये शब्द सीखता है और उनका वाक्य में प्रयोग कैसे हुआ है यह भी भली भांति सीखता है।
07. साहित्य के शिक्षण में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक विकास अलग– अलग होता है जिसके कारण उनके सीखेन की गति भी भिन्न होती है।
08. विद्यार्थियों को संवाद के अवसर उपलब्ध कराना।

कोई भी भाषा हो भाषा ही साहित्य का आधार मानी जाती है वहीं दूसरी ओर साहित्य ही भाषा को सुरक्षित रखता है। भाषा का विकास पहले होता है उसके बाद ही साहित्य का। भाषा शिक्षण दक्षता केन्द्रित होता है किन्तु साहित्य शिक्षण संवेदना, सौन्दर्यानुभूति, उदात्तता आदि का विकास करता है।[5] भाषा शिक्षण में भाषायी कौशलों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा के मुख्य चार कौशल है– सुनना, बोलना पढ़ना और लिखना। सुलेख या सुंदर लेख का भी हिंदी भाषा के शिक्षण में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। सुंदर लेख ही किसी को अपनी ओर आकृष्ट करते है। सुलेख के संबंध में महात्मा गांधी ने कहा है कि– "मै नहीं जानता हूँ कि कब मुझमें यह विचार आया कि सुलेख शिक्षा का कोई आवश्यक अंग नहीं है, लेकिन यह विचार विलायत जाने तक मुझमें विद्यमान था। पीछे जब दक्षिण अफ्रिका में मैने वहीं जन्मे और शिक्षित वकीलों तथा नव युवकों की सुन्दर लिखावट को देखा तो मुझे अपने आप पर लज्जा आयी और अपने भूल पर मै बहुत पछताया। मैने देखा और बुरी लिखावट को सुधारना चाहा, लेकिन अब तक काफी देर हो चुकी थी। मै युवावस्था ने अपनी भूल को कभी भी ठीक नहीं कर पाया। मेरे उदाहरण से भी नव युवक व युवतियों को चेतावनी मिल जानी चाहिए कि सुलेख व्यक्ति की शिक्षा का एक आवश्यक पहलू है।"[6] सुलेख में अक्षर सुन्दर, सुडौल और अनुपातिक होने चाहिए। साथ ही सुलेख लिखने से शुद्ध– अशुद्ध का ज्ञान भी होता है, पंक्तिगत दूरी, विराम चिन्हों का सही जगह प्रयोग आदि भी सीखने को मिलता है।

हिंदी भाषा तथा साहित्य के शिक्षण में सूक्ष्म शिक्षण जिसे अंग्रेजी में माइक्रो टीचिंग कहा जाता है और चित्रकथाओं के माध्यम से शिक्षण देना भी बहुत महत्वपूर्ण है। सूक्ष्म शिक्षण जहां हर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है वहीं चित्रकथाओं का शिक्षण छोटे बालको के लिए विशेष लाभदायी होता है। सूक्ष्म शिक्षण विधि में कथा से संबंधित शिक्षण प्रक्रिया को छोटे– छोटे भागों में बांटकर उनका विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार के क्लास की अवधि 5 से 10 मिनट तक की होती है। डॉ0 पासी के शब्दों में कहे तो– "सूक्ष्म– शिक्षण के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अपेक्षित, अवलोकनीय, मापन– योग्य और नियंत्रण योग्य शिक्षण कौशलों के विकास का अवसर देता है।[7] वहीं दूसरी ओर छोटे बालकों को चित्र अधिक पसंद होते है, उन्हें चित्रों को दिखाकर कहानी आदि आसानी से समझाई जा सकती है। इस विधि से उनकी कल्पना तथा चिंतन शक्ति का विकास होता है।

इन सबके अतिरिक्त विद्यालयों और महाविद्यालयों आदि में विविध साहित्यिक क्रियाओं के आयोजन से भी भाषा तथा साहित्य शिक्षण को सबल बनाया जा सकता है। इन साहित्यिक क्रियाओं का आयोजन विद्यालय में भी या विभिन्न विद्यालयों के बीच भी कराया जा सकता है। इन आयोजनों में सुलेख लेखन, निबंध लेखन, कहानी लेखन, भाषण ,कविता आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जा सकती है। किसी टॉपिक पर वाद–

विवाद भी कराया जा सकता है। इसके लिए एक साहित्यिक समिति का गठन प्रत्येक विद्यालय में किया जाना चाहिए जिससे कि वह समिति समय– समय पर विविध आयोजन सम्पन्न करे।

अंत में हिन्दी साहित्य शिक्षण के दो बिन्दुओं की और चर्चा आती है। वे हैं– गद्य शिक्षण और पद्य या काव्य शिक्षण। यहां एक बात यह ध्यान देने की है कि गद्य में प्रायः उन विषयों को लिया जाता है जिनका संबंध चिंतन से होता है। गद्य पढ़ने का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में पढ़ने या वाचन की योग्यता का विकास करना है जिससे कि वे वैचारिक अभिव्यक्ति में सफल हो सके। वाचन में भी आरोह– अवरोह का विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वही पद्य शिक्षण में विशेष सावधानी अपेक्षित है क्योंकि कविता ने रस, छन्द, अलंकार, काव्य शैलियां, आदि रहती है, जिससे सर्वप्रथम बालकों को परिचित करना उसके बाद ही पाठ में प्रवेश करना। ध्यान रहे काव्य पढ़ाने का लक्ष्य भाषा सिखाना नहीं बल्कि आनंद की प्राप्ति है। कविता की वृत्ति रागात्मक होती है और वह कल्पना तथा जीवन से भाव ग्रहण करने आनंद की अनुभूति कराती है। इसलिए कविता का पाठ मधुर और सस्वर होना चाहिए जिससे विद्यार्थी उसके संवेग और माधुर्य को पकड़ सके। कवि और कक्षा में तादात्मय कर देना ही सफल अध्यापक की विशेषता हे।

इस प्रकार हम देखते है कि भाषा को दो रूपों में पढ़ाया जाता है– प्राथमिक या माध्यमिक कक्षाओं में भाषा के रूप में तथा उच्चतर माध्यमिक या उच्च कक्षाओं में साहित्य के रूप में। भाषा और साहित्य का संबंध अटूट है। भाषा तथा साहित्य के शिक्षण में संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक दोनों ही प्रणालियों का उपयोग किया जाता है। हिंदी का ज्ञान देने के लिए पहले वर्णमाला का ज्ञान, उसके बाद शब्द ज्ञान तथा उसके बाद वाक्य का ज्ञान कराया जाता है किन्तु विश्लेषणात्मक प्रणाली में पहले वाक्य सीखकर उसके बाद शब्द तथा अंत मतें वर्णो का ज्ञान दिया जाता है। भाषा का शिक्षण भाषिक क्षमताओं, योग्यताओं, दक्षताओं एवं कुशलता के विकास के लिए किया जाता है तथा साहित्य का शिक्षण भाषा के सौन्दर्य तत्वों के बोध, भाषा के व्यंग्यार्थ आदि से अवगत कराने के लिए किया जाता है। साहित्य का सृजन करते समय भाषा एक परिष्कृत रूप धारण कर लेती है और अपने सामान्य स्वरूप का त्याग कर देती है। हिंदी के शिक्षण में विद्यार्थियों को क्रियाशील बनाने के लिए वार्तालाप, प्रश्नोत्तर, संवाद, वाचन आदि क्रियाओं का समावेश अपने शिक्षण को और अधिक उत्कृष्ट करने के लिए करना चाहिए।

सन्दर्भ :–

1. डॉ0 कपिल देव द्विवेदी– भाषा विज्ञान एवं भाषा– शास्त्र, षोडश संस्करण– 2019 ई0 विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी। पृष्ठ– 30
2. भाषा शिक्षण, हिंदी भाग– 2, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,पहला संस्करण जुलाई – 2019, पृष्ठ– 207
3. वही, पृष्ठ– 212
4. वही, पृष्ठ– 215
5. http://egyankosh.ac.in//handle/ 123456789ध्47132
6. हिंदी शिक्षण – रीता चौहान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा– 2, संस्करण– 2018/19 पृष्ठ– 121
7. वही, पृष्ठ– 132